4 — पाश्चात्य कला

प्रारंभिक ईसाई कला —

प्रारंभिक इसाई कला ईस्वी की प्रथम छः शताब्दियों की कला है। एक ओर भौतिक सुखों के प्रति उदासीन आत्मवादी ईसाई धर्म का उदय तथा दूसरी ओर क्षीण होती हुई रोमन सत्ता और रोमन साम्राज्य का विघटन ऐसे प्रमुख कारण थे जिससे शास्त्रीय परम्परा के विपरीत एक प्रतीकवादी कला का जन्म हुआ।

यहूदी धर्म के और आम जनता की रुचि बढ़ने के कारण ईसाई धर्म भी लोकप्रिय होने लगा। प्रारंभिक ईसाई मिस्त्रवादियों की भाँति मृत्योपरान्त भावी जीवन में विश्वास करते थे जिसमें भौतिक जगत में परे रहस्यमयी परलौकिक जीवन में शान्ति तथा संतुष्टि प्राप्त करने की चेष्टा निहित थी।

प्रारंभ में रोमन शासकों के भय से यह गुप्त धर्म था, जिसके कारक इसाई धार्मिक चित्रों में निहित उपदेश भी यूनानी बिम्बों को द्विअर्थी आयाम देकर ~~गु~~ गुप्त रखे गए। रोमन बिम्ब ईसाइयों ने विशेष से यूनानी बिम्बों को द्विअर्थी आपोलो की आकृति से यह गुप्त रखे गए। चित्र के कलात्मक गुण - गति पूर्ण मुद्राएँ हैं।